

Vol II Issue VIII Feb 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary  
Research Journal

*Golden Research*

*Thoughts*

Chief Editor  
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher  
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor  
Dr.Rajani Dalvi

Honorary  
Mr.Ashok Yakkaldevi

**IMPACT FACTOR : 0.2105**

**Welcome to ISRJ**

**RNI MAHMUL/2011/38595**

**ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

### ***International Advisory Board***

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [ PK ]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya [ Malaysia ]	Catalina Neculai University of Coventry, UK	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Horia Patrascu Spiru Haret University, Bucharest, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Anurag Misra DBS College, Kanpur	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Titus Pop	George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher	Nawab Ali Khan College of Business Administration

### ***Editorial Board***

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University, Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yaliker Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust),Meerut	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra
	Sonal Singh	

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India  
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net**



## स्त्री विमर्श की वैचारिक उलझनें

संजीव सिंह

(प्रवक्ता हिन्दी विभाग)

जे.बी.एम. डिग्री कालेज सिकन्दरपुर, मदनपुर शाहजहाँपुर

सारांश (Abstract):-

स्त्री को सौन्दर्य, प्रकृति, कोमलता, नैतिकता, परम्परा की अनुसरणकर्ता, आदि स्वरूपों में महिमा मण्डित किया गया है। उसकी लज्जा सहनशक्ति और चुप्पी के पीछे छिपे इतिहास के दर्द की उपेक्षा हुई है। स्त्रियों धर्म में कीलित कर दी गई जबकि पुरुष अपने स्वतंत्र आर्थिक जीवन के कारण धर्म को अपने लाभ के अनुसार तोड़ता मोड़ता रहा है। पुरुष अपनी चालाकी हर समय दिखाता रहा है। आज भी बड़ी चालाकी से पुरुषहितों की सुरक्षा के उद्देश्यों से कहा जाता है कि, 'स्त्रियाँ हैं तो धर्म है' जबकि धर्म में मनुवादी फेरफार और विकृति की वजह से ही मध्यकाल में स्त्री ने पिता की सम्पत्ति पर प्राचीन अधिकार भी खो दिया था। वंश चलाने के लिए मातृत्व की छवि का अवश्य महिमा मण्डन हुआ। यदि हम देवी 'सरस्वती' का धूमिल प्रसंग छोड़ दें तो सामान्यतः किसी हिन्दू दैवीय परिवार में पुत्री का जन्म नहीं होता। गौंधारी के सौ पुत्र और सिर्फ एक भूमिकाहीन अंजान पुत्री। धीरे-2 स्त्री के लिए विवाह एक तरह का विनिमय हो गया। यौन तृप्ति, वंश वृद्धि और घरेलू सेवाओं के बदले उसे धर्म, संस्कार, और 'पति परमेश्वर' के जुमलों के द्वारा उसे महामूर्ख बनाया गया और कथित 'सुरक्षा कवच प्रदान' किया गया। बौद्ध धर्म ने 'जाति भेद' मिटाने का स्तुत्य प्रयास किया किन्तु स्त्री प्रश्न पर वह भी कठोर ही था। दिल्ली सल्तनत एवं मुगलराज्य में स्त्री व्यक्तिगत सम्पत्ति एवं 'स्त्री बाहुल्य भोग' प्रतिष्ठा का महत्वपूर्ण सूचक बन गया। इस सबके वावजूद ज्ञानात्मक स्तर न होने के कारण वह न तो अपनी दुरावस्था का बोध ही कर पाती और न दोष देने के साथ विद्रोह ही कर सकती थी। पति के घर जाने का मतलब स्त्री का पराधीनता की अनगिनत श्रंखलाओं में जकड़ा जाना। बात यहीं तक सीमित नहीं है दृष्टव्य है कि, पढ़ी लिखी स्वच्छन्द लड़कियाँ भी विवाह के बाद अच्छे कपड़ों एवं जेवरों से सुसज्जित 'घरेलू उच्च स्तरीय नौकरानी' के अतिरिक्त कुछ नहीं रह जातीं। इसी सन्दर्भ में स्त्रीवादी लेखिकाओं ने जो स्त्री विमर्श रूपी मुहिम चलाई है उसकी बड़े पैमाने पर वैचारिक उलझनें हैं जो कि महत्वपूर्ण रूप से दृष्टव्य हैं।

वैचारिक विश्लेषण:-

स्त्री शिक्षा पर हिन्दी में आगरा से प्रथमतः एक किताब छपी थी। 'स्त्री शिक्षा विषय' 1847ई0 यह पुस्तक गौरमोहन विद्यालंकार की बांग्ला पुस्तक 'स्त्री शिक्षा विधायक' 1822 का अनुवाद थी। इसे 'आगरा स्कूल बुक सोसाइटी' ने प्रकाशित किया था जिसे महादेव साहा ने 1988 में पुनर्मुद्रित कराया था। 19वीं सदी के पुरुष समाज सुधारकों ने जड़ धार्मिक व्यवस्था पर प्रहार करके उसमें स्त्री की दासता के बुने मजबूत जाल के कई लौह तार तोड़ने का कार्य किया था। इससे मध्यमवर्ग की स्त्रियों में स्वत्व का बोध पैदा होना शुरू हुआ जिससे इनकी जिंदगी में एक गति आयी थी। पुरुषों ने स्त्री को 'दासी' के बजाय 'सहयात्री' समझना शुरू किया। वकिमचन्द्र जी को पुनरुत्थानवादी कहा जाता है उन्होंने कहा था 'स्त्री जिस सीमा तक पुरुष की आज्ञाकारिणी अपने यहाँ है अन्यत्र उतनी नहीं' उन्होंने स्वीकारा 'स्त्रियाँ भी मनुष्यजाति हैं इसलिए उन्हें भी पुरुषों जैसे अधिकार प्राप्त होने चाहिए जिन कामों पर पुरुषों का अधिकार है उन सभी कामों पर स्त्री का अधिकार है उन सभी कामों पर स्त्री अधिकार भी होना चाहिए।'

पंडिता रमावाई स्त्री अधिकारों के लिए विस्तृत संघर्ष करने वाली प्रथम स्त्री थीं। उनके माता पिता को समाज ने इसलिए वहिष्कृत कर दिया क्योंकि उन्होंने अपनी बेटी को शिक्षा दी थी। मृत्यु शय्या पर पिता शर्बत और माँ रोटी माँगते-माँगते चल बसीं। पंडिता रमावाई की माँ की अर्थी को चौथा कंधा नहीं मिला तो उन्होंने लड़ झगड़कर स्वयं कंधा दिया और कहा स्त्री कंधा क्यों नहीं दे सकती? कितनी बड़ी विडम्बना? उसके बाद उन्होंने समाज सुधारक रमावाई रानाडे से अंग्रेजी सीखी फिर लंदन गई और ईसाई बन गई एवं स्वयं को पादरियों से उसी तरह दूर रखा जैसे पंडितों से रखा था।

सही मायने में 20वीं शदी का स्त्री विमर्श हजारों साल की ऐतिहासिक गर्द से ढँकी स्त्री का पुनराविष्कार है। यह स्त्री की सामाजिक दावेदारी का स्वरूप है स्त्री कह रही है कि उसका इतिहास है और वह अपने इतिहास में अस्तित्वमान है। वह अपनी गुलामी के अवशेषों को चुनौती देने के लिए खुद उठ खड़ी हुई है क्योंकि, पुरुष एक सीमा के बाद अपने हितों और अंतर्निहित संस्कारों की वजह से स्त्री की विस्त्रत स्वाधीनता की कल्पना करने में असमर्थ होता है। स्त्री की अधिकारों की आवाज से 19वीं सदी में जिस ऐतिहासिक संघर्ष की शुरुआत हुई थी, वह अब स्त्री सवलीकरण की विभिन्न परियोजनाओं के एक खास मोड़ पर पहुँच चुकी है। स्त्री विमर्श के एक बड़े भाग में वैश्वीकरण को स्त्री-मुक्ति के महाद्वार के रूप में देखा जा रहा है। "पुल्लिंग और स्त्रीलिंग की समष्टि अभिव्यक्ति की कुंजी है। पुरुष उछाल दिया जाता है उत्क्षेपण होता है

Title : स्त्री विमर्श की वैचारिक उलझनें

Source: Golden Research Thoughts [2231-5063] संजीव सिंह yr:2013 vol:2 iss:8

स्त्री आकर्षण करती है यही जड़ प्रकृति का चेतन रहस्य है।<sup>1</sup> यह बात जयशंकर प्रसाद जी ने बहुत ही स्पष्ट रूप से कही है।

आज के स्त्री विमर्श की पहली उलझन है इस देश की जातीय सांस्कृतिक परम्पराओं से उसका इकहरा संवाद जो इस विमर्श को लगभग पूरी तरह अतीत के विरुद्ध खड़ा कर देता है। आधुनिक काल विचारों का युग है और ज्ञान का एक द्वन्द्वात्मक विकास इस काल की एक अपनी विशेषता है। स्त्रीवादियों की नजर में पुरुषों का लिखा सम्पूर्ण या पुराना साहित्य अथवा आधुनिक साहित्य स्त्री विरोधी अथवा वेकार है। यह स्वीकार किया जाता है कि ले देकर सौ पचास सालों का आत्म पहचान और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का स्त्री इतिहास है। इस सब में पिछला दशक कुछ खास है क्योंकि, आर्थिक उदारीकरण ने स्त्री मुक्ति चेतना के इतिहास में उमंग से भरा एक अनोखा प्रस्थान बिन्दु पैदा कर दिया है। अब स्त्री अपनी उसी 'देह' को प्रभावशाली विमर्श का 'लुक' देने में सक्षम हो रही है जो वस्तुतः 'देह' उसके लिए हजारों साल से उसकी निर्बलता की पहचान थी। 'मंथली प्रब्लम' गर्भधारण, बच्चे को दुग्धपान आदि से ऊपर उठकर आज वह रचनात्मकता के अस्त्र शस्त्रों के उपयोग में 'कहीं उसके विचार और विश्वास गुँथे हुए हैं तो कहीं उसके उल्लास और अवसाद के क्षण कहीं उसकी अपनी आकांक्षाएँ अंकित हैं तो कहीं धिक्कार और प्रताड़ना के उदगार।'<sup>2</sup>

स्त्री औपनिवेशिक आखेट बनकर वास्तव में उतनी ही आत्मसम्मान विहीन है जितनी पित्रसत्तात्मक धार्मिक जंजीरों में बंधकर वह पूर्व में थी। 21वीं सदी में पश्चिमी दुनिया का अपसांस्कृतिक साम्राज्यवाद स्त्री को चारों ओर से दबोच रहा है। उसकी कुदृष्टि स्त्री 'देह' पर है। उसकी नजर में स्त्री की बड़ी सम्पत्ति उसका 'सौन्दर्यशाली रूप' और 'यौवन' है। पूर्व में 'वाशिंग मशीन' और 'दासी' को आज आधुनिक रूप में 'हॉट चीज' और मात्र 'वेड पार्टनर' स्वरूप में संकुचित करने की चालें चली जा रही हैं। पित्रसत्तात्मकता और पश्चिमी दुनिया के अपसांस्कृतिक छलावे में स्त्री के पास 'अहिल्या' बन कर शाप भोगने के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग ही नहीं रह जाता।

आखिर यह क्यों नहीं सोचा एवं स्वीकारा जाता कि स्त्री हमारा 'अंश' और 'विस्तार' है। वह हमारी ऐसी जन्मभूमि है जिसे हमने अपना उपनिवेश बना लिया है। वास्तव में हमारी सोच और संस्कृति के सारे सामन्ती और साम्राज्यवादी मूल्य उपनिवेशों के आधिपत्य और सोचों को जायज ठहराने की मानसिकता से पैदा होते हैं। वीसवीं शताब्दी में जो दुनिया भर में उपनिवेश भौतिक और मानसिक रूप से स्वतंत्र हुए उनमें 'स्त्री' नाम का उपनिवेश भी है।<sup>3</sup>

आज के स्त्री विमर्श की दूसरी बड़ी उलझन अमेरिकी संस्कृति के हमले के प्रति तटस्थ रुख है। परिणामस्वरूप स्त्रीवाद पूर्व की कूपमंडूकता से बाहर निकलते हुए पश्चिम के अपसांस्कृतिक साम्राज्यवाद का अंग हो रहा है। स्त्रीवादी स्त्री लिंग भेद जरूर मिटा रही हैं और वह अपनी भाषा भी बना रही हैं किन्तु, 'बाजारी पण्य' के रूप में। इस प्रकार यह विडम्बना है कि, वह एक सार्वभौमवाद से छूटकर दूसरे सार्वभौमवाद के जाल में स्वतः फँस रही है। एक ध्रुवीय वैश्वीकरण उसका दूसरा सार्वभौमवाद है। स्त्रीवाद का प्रयोग आज 'सेक्स विन्व एवं प्रतीकों' के द्वारा बाजारी कीमत बसूलना है जो एक प्रकार से नाई को उसी के उस्तरे से मूडने के समान है। अमेरिकी अपसांस्कृति के असर में कहा जाता है कि स्त्री मुक्ति का प्रथम चरण उसकी 'देह' मुक्ति है किन्तु स्मरण रहे मनचाही 'यौन स्वतन्त्रता' स्त्री स्वतंत्रता समझ लेना महा मूर्खता है। यह एक बार फिर स्त्री की भाषा को देह की भाषा से व्याख्यायित एवं हथियाने वाला उत्तर आधुनिक दर्शन है। ऐसा स्त्रीवाद परोक्ष रूप से मर्दवाद की वापसी है। स्त्रीवाद खरबूजे पर छुरी का गिरना नहीं बल्कि छुरी पर खरबूजे का गिरना है। दोनों में कटने की नियति स्त्री मात्र की है मात्र कौण बदल जाते हैं। स्त्रीवाद मक्कार और व्यसनी पुरुषों को अंगूठा दिखाना हो सकता है यह भी सम्भव है कि, उसे स्त्रीत्व का एक प्रति आक्रमणात्मक उद्घोष की संज्ञा दी जाए यह स्त्री का स्त्री के प्रति 'समलैंगिक प्रेम' हो सकता है किन्तु स्मरण रखना चाहिए कि स्त्रीवाद की अनेक अग्निशिखाएँ हैं जिसमें ऐसा समाज हो तो प्रश्न फिर वही आता है कि क्या कुछ 'अल्ट्रा' स्त्रीवादियों का अति स्वायत्त संसार उन्हें उत्कर्ष की ओर ले जा पायेगा?

ज्यादातर स्त्रीवादी आभिजात्यवादी और उच्चवर्गीय हैं। उसकी साहित्य कला, पत्रकारिता, व्यापार, प्रशासन, राजनीति के क्षेत्र में अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियाँ हैं। इन सभी का स्त्री विमर्श एक ऐसे स्त्रीवाद से जुड़ा है जो सही मायने में आम स्त्री की आवाज ही नहीं है। इसी स्त्रीवाद के दायरे में वे औरतें ज्यादा हैं जिन्होंने 'परिवार' के स्थान पर 'उन्मुक्त अकेलेपन' को चुना है और विवाहित पुरुष से 'सेक्स सम्बन्ध बनाते हुए प्यार की पीँग बढ़ा रही हैं', या 'सेक्स' फार सेक्स' का महान सिद्धान्त अख्तियार कर रहीं हैं। महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि, स्त्रीवादी लेखिकाएँ परिवार, मातृत्व, देशकाल, और चरित्र की पूर्व अवधारणा की घोर विरोधी हैं। विश्व की तीसरी महान् स्त्री चिंतक मानी जाने वाली तसलीमा नसरीन स्वीकारती हैं कि "मेरी संज्ञा में चरित्रहीनता के साथ यौनता (मगनसपजल) का कोई सरोकार नहीं होता, सरोकार होता है। शठता, नीचता, बेईमानी, झूठ, प्रताड़ना, छलना और चतुराई का।" 5 इसी प्रकार उन्हें मातृत्व सारी समस्याओं की जड़ लगता है जो एक विल्कुल सृष्टि और प्रगति विरोधी दृष्टि है। ऐसी दृष्टि में वे 'प्रेम' को भी कहीं न कहीं प्रच्छन्न मर्दवाद स्वीकारती हैं। सम्पन्न कामकाजी स्त्रियाँ 'प्रेम' से अधिक 'स्त्री देह की सत्ता' को अर्थपूर्ण मानती हैं। 'देह' उनका भूगोल ही नहीं इतिहास भी है।

आज के स्त्री विमर्श की तीसरी बड़ी उलझन उसमें विस्तृत सामाजिक सरोकारों का सिकुड़ना है। क्या वास्तव में कोई भी दिग्गज अपनी संस्कृति को गिरा कर स्त्री को उठा सकता है? स्त्रियों की दशा आज भी बड़ी विचित्र है। वे किसी न किसी रूप में पुरुषों का रचा सांस्कृतिक संसार ही ढो रहीं हैं। मध्यम वर्गीय स्त्रियों के आपस में मिलने पर नये, कपड़ों, नये जेवरों, सौन्दर्य प्रसाधनों, एवं किसका मर्द 'हेण्डसम' है? किसके घर नया टीबी या नयी कार अथवा उसके पति या सास का व्यवहार कैसा है? कौन लड़की भागी? किसकी बहू प्रेंगनेन्ट है? किस लड़की या किस स्त्री का किसके साथ चक्कर चल रहा है? आदि बातें ही उनके बीच अधिकांशतः होती हैं। वहाँ पर साहित्य, कला, समाज, राजनीति की बातें बिल्कुल नदारद होती हैं।

स्त्री विमर्श की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उलझन है स्त्री साहित्य का इतिहास लेखन। पश्चिम से शोर उठा है इतिहास का अन्त हो गया है जबकि, इतिहास की लूट हो रही है, विखण्डन हो रहा है, गायब किया जा रहा है इन सबका अर्थ है उसकी यथार्थ परकता को उसकी तात्त्विक अस्मिता को समाप्त करने के षडयन्त्र किये जा रहे हैं जिसमें बड़े पैमाने पर स्त्री को मोहरे के रूप में 'यूज' किये जाने की साजिशें हो रही हैं।

### निष्कर्ष (conclusion)

स्त्री विमर्श हिन्दी आलोचना के हाशिए से उठी हुई आवाज है और वाकी को हाशिए पर भेजने की आवाज है। होने वाले बड़े-बड़े सम्मेलनों में बड़े शोर-शराबे के साथ यह बात स्वीकार की जाती है कि "स्त्रियों को पुरुषों के मुकाबले जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों में कम अवसर मिलता है और उन्हें प्रायः सभी समाजों में दवा कर रखा जाता है।" 4 ध्यान रहे यह सत्य है कि, यह साहित्यिक या सामूहिक शुद्धतावाद, घोषणावाद का ही दूसरा पक्ष है जिसमें कथनी और करनी में जमीन आसमान का भेद है। कभी सिर्फ आण्डाल, अक्कमहादेवी, ललदे, मीरा बंगमहिला, महादेवी, सुभद्राकुमारी चौहान थीं आज बड़ी संख्या में अन्य लेखिकाएँ इस विमर्श का हिस्सा हैं। वे अपना स्त्री अनुभव, स्त्री-रचनात्मकता, स्त्री-चेतना, स्त्री-स्वतन्त्रता और 'लैंगिक न्याय' की ऐतिहासिक माँग कर रहीं हैं। आज वास्तविकता के घरातल पर बदलती हुई दुनिया में औरत के बदलते संसार को पहचानने की अंतर्दृष्टि आवश्यक है। जिसकी खोज में 'पुरुष को गालियाँ' देने की नहीं प्रत्युत उसकी सकारात्मक साक्षेदारी की नितान्त आवश्यकता है। जिसे स्त्री विमर्श की उद्घोषिकाएँ सिर से नकार रहीं हैं जो कि भविष्यगत रूप से अत्यन्त दुखद है।

बड़े पैमाने पर स्त्रियों की भूण हत्याएँ हो रहीं हैं। इस आज के पारिवारिक बाजार में 'बेटा रूपी कोकीन' पर सबकी गिद्ध दृष्टि है और

इस बाजार के बड़े खरीदारों में स्त्री भी कहीं पर पीछे नहीं हैं प्रत्युत बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रही है। स्त्री की मर्द की बाराबरी में खड़े होने की माँग स्त्रीवाद नहीं है अपितु पुरुष से पारिवारिक सामाजिक अलगाव 'स्त्रीवाद' है। बृहत्तर सामाजिक चिंताओं से विच्छिन्नता 'स्त्रीवाद' है। स्पष्ट है समाज की पुनरुत्थानवादी उपभोक्तावादी, चुनौतियों, पर्यावरण और संस्कृति की समस्याओं से तटस्थ होकर संकीर्ण धरातल से लिखा गया विमर्श स्त्री साहित्य में मात्र कुछ सम्पन्न स्त्रियों की यशोगाथा होगा स्त्री विमर्श नहीं। अस्तु इन सारी उलझनों से बचते हुए निश्चित रूप से उत्कर्ष सामंजस्य दृष्टि को आत्मसात करते हुए लिखा गया स्त्री विमर्श यथार्थपरक का स्त्री विमर्श होगा एवं स्त्री इतिहास में मील का पत्थर अवश्य साबित होगा।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची:-**

- 1.स्कन्दगुप्त : जयशंकर प्रसाद पृ.सं.-46 विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
- 2.अस्मिता के संवेदन : वीरेन्द्र सिंह पृ . सं.-1 श्याम प्रकाशन जयपुर प्रथम संस्करण 1990।
- 3.मन्नू भण्डरी: एक कहानी यह भी (स्पष्टीकरण) पृ.सं.-7 राधाकृष्ण प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2008।
- 4.आदमी की निगाह में औरत : राजेन्द्र यादव (भूमिका) पृ.सं.-7 राजकमल पेपर बैक्स दरियागंज नई दिल्ली द्वितीय संस्करण 2007।
- 5.औरत का कोई देश नहीं होता: तसलीमा नसरीन (दोषी कौन पुरुष तन्त्र लेखन से) पृ.सं.-190 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2009।
- 6.स्वतंत्रोत्तर हिन्दी साहित्य एवं साहित्यकार:डा. नामदेव उतरक पृ.सं.-34 चन्द्रलोक प्रकाशन कानपुर प्रथम संस्करण 2002।

# Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- \* International Scientific Journal Consortium Scientific
- \* OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts  
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra  
Contact-9595359435  
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com  
Website : www.isrj.net